व्यंग्य एवं विरोध के कवि भवानी प्रसाद मिश्र

डॉ अनिल कुमार
सहायक आचार्य हिंदी
राजकीय आर्य महाविद्यालय
नूरपुर कांगड़ा हिमाचल प्रदेश

हिंदी साहित्य के दादा और कविता के गांधी कहे जाने वाले छायावादोत्तर कविता के अग्रणी हस्ताक्षर भवानी प्रसाद मिश्र हिंदी साहित्य में अपनी भाषा की ओजस्विता और सरल व्यवहार के लिए जाने जाते हैं उनका काव्य हिंदी साहित्य में अपने सरल और क्रियात्मक व्यवहार के लिए जाना जाता है। उनकी रचनाओं में गहन से गहन बात को भी अत्यंत सटीक और सरल तरीके से अभिव्यक्त करने की क्षमता है। भवानी प्रसाद मिश्र के काव्य में अनुभूति परकता और आत्मिक गहनता का स्पष्ट आभास परिलक्षित होता दिखाई देता है। हिंदी साहित्य में गांधीवादी विचारक एवं दूसरे तार सप्तक के प्रमुख कवियों में अग्रणी हस्ताक्षर के रूप में भवानी प्रसाद मिश्र का प्रमुख स्थान है। वे हिंदी साहित्य के एक अत्यंत विशिष्ट कवि थे जिन्हें उनकी सरलता सहजता मानवीयता और सामाजिक चेतना के लिए जाना जाता है । उनकी कविता न केवल भावनात्मक गलियारों की अभिव्यक्ति है अपितु समय ,समाज और व्यक्ति जीवन के संघर्षों का जीवंत उदाहरण भी है ।

प्रसिद्ध कवि और लेखक भवानी प्रसाद मिश्र का जन्म 29 मार्च 1913 को मध्य प्रदेश के होशंगाबाद जिले के टिगरिया गांव में हुआ था. । उनके पिता का नाम सीताराम मिश्र और मां का नाम गोमती देवी था. । कहा जाता है कि उनके पिता घर पर उन्हें रामायण का पाठ कराते थे और कविता सुनाते थे।. क्रमश: सोहागपुर, होशंगाबाद, नरसिंहपुर और जबलपुर में उनकी प्रारंभिक शिक्षा हुई तथा 1934-35 में उन्होंने हिन्दी, अंग्रेजी और संस्कृत विषय लेकर बी ए पास किया। भवानी प्रसाद मिश्र को बचपन से ही साहित्यिक माहौल मिला था, जिससे उनका साहित्य के प्रति लगाव बढ़ा।. उन्होंने बहुत ही कम उम्र में लेखन शुरू कर दिया था. बी.ए. की पढ़ाई के दौरान उनकी मुलाकात प्रसिद्ध साहित्यकार माखनलाल चतुर्वेदी से हुई, जिनका उन पर गहरा प्रभाव पड़ा।. इसके बाद उन्होंने राष्ट्रीय जागरण पर लिखने का काम शुरू किया ।.

भवानी प्रसाद मिश्र गांधीवादी विचारों से प्रभावित थे।. वे गांधी जी के विचारों के समर्थक थे और युवावस्था से ही उनके विचारों पर काम कर रहे थे।. उन्होंने एक स्कूल भी खोला और गांधी वाङ्मय के हिंदी खंडों का संपादन किया. इसी कारण उन्हें 'कविता का गांधी' कहा गया।. उन्होंने हिंदी साहित्य जगत में कई दशकों तक काव्य कृतियों का सृजन किया. 20 फरवरी 1985 को 71 वर्ष की आयु में उनका निधन हुआ था.

साहित्य में व्यंग्य का तात्पर्य होता है किसी व्यक्ति, वस्तु, या स्थिति की बुराइयों, कमियों या दोषों को हंसी-ठिठोली के माध्यम से प्रकट करना। इसका उद्देश्य आलोचना करना होता है, लेकिन वह सीधे तौर पर नहीं बल्कि व्यंग्यात्मक भाषा, कटाक्ष या तंज के रूप में होता है। व्यंग्य समाज में व्याप्त बुराइयों को उजागर कर सुधार की ओर प्रेरित करता है। वहीं विरोध का स्वरूप सत्ता, सामाजिक असमानता, दमन और पारंपरिक रूढ़ियों के खिलाफ एक मुखर आवाज है। यह

केवल नकारात्मक आलोचना नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन, मानवीय मूल्यों की रक्षा, और हाशिए पर पड़े लोगों की अस्मिता को जगाने का एक सशक्त माध्यम है। इसका स्वरूप दौर के अनुसार बदलता रहा।

भवानी प्रसाद मिश्र की कविताएं व्यंग्य एवं विरोध की अभिव्यक्ति की वह दो धारी तलवार है जो हर विषय का दिग्दर्शन बड़ी सटीकता और प्रासंगिकता से करवाती है I मानो गागर में सागर भरने का काम कर रही हों। शब्दों के साथ खेलने और उसके व्यवहार को आंखों ही आंखों में परखने की कसौटी लिए भवानी प्रसाद मिश्र एक कुशल शिल्पी की भांति काव्य में नित नए नए प्रयोग करते चले गए। उनका रचना संसार आदर्श और यथार्थ के भाव से पूर्ण रूपेण परिपूर्ण है। उन्हें जितना भरोसा सृष्टि के निर्माता के अस्तित्व पर था उतना ही भरोसा वह गांधी जी के विचारों पर भी करते थे। इसीलिए उन्होंने गांधी जी के विचारों को अपने साहित्य का आधार बनाकर समाज के समक्ष इसका उदाहरण प्रस्तुत किया। इस बात का हमेशा मलाल रहेगा की एक साहित्यकार के रूप में उन्हें जितनी कीर्ति और यश मिलना चाहिए था शायद वह नहीं मिल पाया, जिसके पीछे प्रमुख कारण वर्ग संघर्ष, विरोध का स्वर और सामाजिकता के दर्शन प्रमुख रहे ।उन्होंने अपनी **"गीतफरोश"** कविता में साहित्य के बाजारीकरण पर व्यंग्य करते हुए समाज की रुग्ण मानसिकता को उजागर किया है। वे कहते हैं

"जी हाँ हुज़ूर, मैं गीत बेचता हूँ,
मैं तरह-तरह के गीत बेचता हूँ,
मैं क़िसिम-क़िसिम के गीत बेचता हूँ!
जी, माल देखिए, दाम बताऊँगा,
बेकाम नहीं हैं, काम बताऊँगा,
कुछ गीत लिखे हैं मस्ती में मैंने,
कुछ गीत लिखे हैं पस्ती में मैंने,
यह गीत सख़्त सर-दर्द भुलाएगा,
यह गीत पिया के पास बुलाएगा!"1

प्रस्तुत कविता में कवि समाज की भौतिकवादी दृष्टिकोण को उजागर करते हुए यह कहने का प्रयास कर रहा है की की वर्तमान समाज में न केवल कला वस्तु बन गई है अपितु भावनाएं भी बिकाऊ हो गई हैं। कविता के एक अन्य पद्य भाग में कवि ने समाज की करनी और कथनी के अन्तर के स्वरूप को प्रस्तुत करते हुए व्यंग्यात्मक रुप में समाज का चित्रण किया है। वे कहते हैं

जी, पहले कुछ दिन शर्म लगी मुझ को
पर पीछे-पीछे अक़्ल जगी मुझ को;
जी, लोगों ने तो बेच दिये ईमान।
जी, आप न हों सुन कर ज़्यादा हैरान।
मैं सोच-समझकर आखिर
अपने गीत बेचता हूँ;
जी हाँ हुजूर, मैं गीत बेचता हूँ। ।"2

कहने का तात्पर्य यह है कि लोग अपनी सुविधा के अनुसार ईमान और कला तक बेच देते हैं, जो बड़ी-बड़ी बातों के विपरीत छोटे-छोटे स्वार्थी कार्य हैं। प्रस्तुत पंक्तियों में समाज की कृत्रिमता और दिखावे पर व्यंग्य मिलता है ।

"यह गीत सुबह का है, गाकर देखिए,
यह गीत ग़म का है, सुनकर देखिए।"3

कवि व्यंग्य के माध्यम से यह दिखाते हैं, कि भावनाएँ भी अब बिकाऊ हो गई हैं। प्रस्तुत पंक्तियों से यह लगता है कि व्यक्ति में अब संवेदना और चेतना समाप्त हो चुकी है। व्यक्ति का मन जिसमें कहीं प्रेम, प्यार और स्नेह विद्यमान होता था। वह अब लगभग मर चुका है। अपनी **दैनिक** कविता में कवि इसके ऊपर व्यंग्य करते हुए कहता है कि :-

आज का हमारा दैनिक
कितना अपठ्य है
आज का हमारा मानव
कितना सुसंस्कृत है
कितना महान है
कितना असह्य है!4

कवि कहता है कि आज का समाचार पत्र जब हम लोग देखते हैं हमें केवल समाज में व्याप्त असभ्यता और संस्कार विहीनता के ही दर्शन होते हैं। भवानी प्रसाद मिश्र की कविताओं में समाज की कृत्रिमता और दिखावे पर व्यंग्य मिलता है।

लोग बड़े-बड़े नियमों मर्यादाओं और उसूलों की बात करते हैं, किंतु जब बात व्यवहारिकता की आती है तो उनके कदम लड़खड़ा जाते हैं। कवि के अनुरूप वर्तमान समय में सिद्धांत केवल दिखावे के लिए है या दूसरों के लिए। अपने लिए तो समय के अनुरूप दल बदलने की लोगों की आदत हो गई है । उदाहरण के लिए **'तूस की आग'** की निम्न कविता देखिए –

" एक वसंत में
दो बैल
चर गये थे
मेरा गुलज़ार का गुलज़ार
मगर
ऐसा तो नहीं हुआ
कि मैंने
फिर नहीं रोपे
फूल-पौधे !"5

भवानी प्रसाद मिश्र सरल और सहज शब्दों में गहरी बात व्यक्त करने वाले कवि हैं । उनकी कविता हमेशा पाठक से बात-चीत करती हुई प्रतीत होती है । वर्तमान समय में समाज में रहने वाला कोई भी व्यक्ति स्वतंत्र नहीं है, जहां संवैधानिक तौर पर व्यक्ति को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता

होती है। वही आज के समाज में व्यक्ति अपने विचारों को खुलकर किसी भी मंच पर अभिव्यक्त नहीं कर सकता। कवि की **चार कौए उर्फ चार हौए** कविता इसी तरह का व्यंग्य प्रस्तुत करती है

बहुत नहीं थे सिर्फ चार कौए थे काले
उन्होंने यह तय किया कि सारे उड़ने वाले
उनके ढंग से उड़ें, रुकें, खायें और गायें
वे जिसको त्योहार कहें सब उसे मनायें ।"6

कारण लोगों को सच सुनने की आदत नहीं है और जो सच बोलेगा वह मंच से हटा दिया जाएगा। अपने व्यंग्य के माध्यम से भवानी प्रसाद मिश्र ने वर्तमान समाज की राजनीतिक व्यवस्था पर कटाक्ष किया है। **त्रिकाल संध्या** कविता संग्रह में कवि ने इन्हीं भावों को अभिव्यक्ति दी है

"कैसा समय आ गया है
कि बोलना भी अपराध हो गया है।"7

कहने का तात्पर्य है कि व्यक्ति से उसकी सामाजिक अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता छीन ली गई है।। कवि यह दिखाते हैं कि सामान्य नागरिक भी डर के माहौल में जी रहा है। यह सत्ता की दमनकारी नीति के खिलाफ प्रतिरोध है।

हंस मोर चातक गौरैयें किस गिनती में
हाथ बांधकर खड़े हो गए सब विनती में
हुक्म हुआ, चातक पंछी रट नहीं लगायें
पिऊ-पिऊ को छोड़ें कौए-कौए गायें ।"8

अर्थात वर्तमान व्यवस्था में नेता तानाशाह की भांति अपनी इच्छा अनुरूप व्यवहार करना अपना अधिकार समझते हैं किंतु अन्य किसी को भी अपने विचार अभिव्यक्ति का अधिकार नहीं है। जनता अपने छोटे-छोटे लाभों के लिए उनके समक्ष मजबूर और लाचार होने को विवश हैं। जनता की अकर्मण्य उन्हें उनके अधिकारों के हनन पर भी चुप्पी साधे रखने को मजबूर कर देती है। जबकि नेता इस का लाभ ले जाते हैं। यही कारण है कि हम लोग आज जरूरत से ज्यादा पिछड़ रहे हैं। **'सतपुड़ा के घने जंगल** कविता में कभी के कहने का यही भाव है

"सड़े पत्ते, गले पत्ते, हरे पत्ते, जले पत्ते,
झाड़ ढंक लें खड्ड को,
ढंक लें कि अनमना-सा लगा है!"9

यह शोषण और सामाजिक विषमता के विरुद्ध प्रकृति के माध्यम से प्रतिरोध का प्रतीक है।कवि भवानी प्रसाद मिश्र जहां सामाजिक व्यवस्था और व्यक्ति की मानसिकता पर करारा व्यंग्य करते हैं वहीं पर वह समाज की इन विद्रूपताओं का विरोध भी करते हैं। उनको लगता है कि व्यक्ति को उसका हक, उसका मान सम्मान मिलना चाहिए। यहां तक की सामाजिक जनजीवन में किसी तरह की विषमता या असमानता की भावना नहीं होनी चाहिए। जनजीवन की विषमताओं, विडंबनाओ और विसंगतियों के विरोध में ही उन्होंने अपना स्वर मुखर किया है। उनके जीवन में गांधीवादी

विचारों का इतना प्रभाव रहा है कि उन्होंने शुरू से ही भेदभाव असमानता की भावनाओं का आक्रोश पूर्ण विरोध किया है। उनका मानना है की समाज में श्रमिक को उसके श्रम के बदले समय पर मेहनताना नहीं मिला तो समाज में विस्फोट हो जाएगा। उनकी **"प्रलय"** कविता इसी मनोभाव को अभिव्यक्त करती है

एक दिन होगी प्रलय भी;
मिट रहेगी झोपड़ी,
मिट जायेंगे नीलम-निलय भी।10

उनको लगता है कि यदि समाज में समय पर समानता और बराबरी की स्थापना नहीं होगी और लोगों को समय पर उनका अधिकार नहीं मिलेगा तो संभवत प्रकृति अपने आप समानता लाने में देर नहीं करेगी। वह स्वयमेव संतुलन की राह पकड़ लेगी।

काली होगी तारिणी गंगा,
तरणिजा व्याल होगी,
और शिव होंगे न शंकर,
कंठछन जय माल होगी।
कर न पायेगा हमें आश्वस्त,
जननी का अभय भी,
एक दिन होगी प्रलय भी। 11

यदि प्रकृति ने स्वयं संतुलन की स्थापना का बेड़ा उठाया तो अन्य समूल नष्ट हो जाएगा। प्रस्तुत पंक्तियों में बताने का प्रयास किया गया है की स्वतंत्र भारत के निवासी होने के बावजूद भी लोग अभाव भूख अशिक्षा और शोषण का शिकार होने को विवश है। देश का अन्नदाता उन आकार भी भूखा रहने को विवश है और कुछ थोड़े से लोग उनकी इसी व्यवस्था का लाभ उठाकर अपने हितों का पोषण कर रहे हैं I कवि भवानी प्रसाद मिश्र तानाशाही और डर के कारण समाज में उत्पन्न खामोशी के विरोध में अपनी **सन्नाटा** कविता में कहते हैं

"कुछ लिख कर सो, कुछ पढ़ कर सो
तू जिस जगह जागा सवेरे, उस जगह से बढ़ कर सो।"*12*

यह भवानीप्रसाद मिश्र के प्रतिरोध का गांधीवादी तरीका था, जहाँ हथियार उठाए बिना केवल शब्दों की ताकत से सत्ता और कुप्रथाओं को हिला दिया जाता था I यदि कहीं गलती से यह लोग अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होकर कभी आवाज उठा दें तो उनकी आवाज वही दफन कर दी जाती है। खाने का तात्पर्य यह है की असहाय असमर्थ लोगों को अपनी समस्याओं की अभिव्यक्ति का भी अधिकार समझ में नहीं दिया जाता है। क्योंकि उनको सुनने वाला ही कोई नहीं होता। वर्तमान समय में शोषण रूपी ब्याल नित्य प्रति बढ़ रहा है। इसका आकार अंतहीन होकर निर्धन लोगों के जीवन को अस्त व्यस्त करने को आतुर है। भवानी प्रसाद मिश्र की कविता देश और जनता के लिए सत्ता को खुली चुनौती देती है उनकी कविता में शोषण के प्रति आक्रोश और तीव्र ललकार है I भवानी प्रसाद मिश्र का काव्य अन्याय और शोषण के विरुद्ध खड़ा होता है: **"आज के दैनिक"** कविता की पंक्तियां लोगों की सोई हुई मानसिकता को झकझोर रख देती हैं।

मानव जब
अधीर होकर
आगे की पीढ़ियों की
छाती को न छेदें ये
अपना भयानक भेद उन तक न भेजें ये।"13

कवि लोगों से आह्वान करते हैं कि कम से कम अपने अधिकारों के प्रति तो जागरुक रहो । यह पंक्ति उनके निर्भीक और स्पष्ट विरोध को दर्शाती है।

अंतत यह कहा जा सकता है की भवानी प्रसाद मिश्र की कविता वर्तमान भौतिकवादी दृष्टिकोण के ऊपर कुठाराघात करते हुए तीखा व्यंग्य करती है। मिश्र का कहना है कि कविता केवल मनोरंजन का साधन नहीं अपितु समय आने पर एक ऐसे शस्त्र का काम भी करती है, जो समाज को उसकी जड़ताओं से मुक्त करवाता है। उनके काव्य से हमें यह सीख मिलती है कि अपने अधिकारों के प्रति जागरूक और सचेत रहना चाहिए। अपने काव्य में व्यंग्य एवं विरोध के माध्यम से उन्होंने सत्ता के सामने कभी भी अपनी हार स्वीकार नहीं की। उन्होंने समाज को सचेत करते हुए कहा है कि अपने अधिकारों के लिए तथा व्यवस्था के प्रति विरोध जताने के लिए हमें हिंसा और चीखने चिल्लाने की नहीं बल्कि मर्यादा में रहते हुए आवाज उठाने की जरूरत है। गांधीवादी विचारधारा से संपन्न भवानी प्रसाद मिश्र की कविता अपने पैने व्यंग्य और सौम्यता से परिपूर्ण विरोध की मिसाल के रूप में काव्य संसार में हमेशा अमर रहेगी।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. गीत फरोश काव्य संग्रह भवानीप्रसाद मिश्र पृष्ठ 180
2. गीत फरोश काव्य संग्रह भवानीप्रसाद मिश्र पृष्ठ 180
3. गीत फरोश काव्य संग्रह भवानीप्रसाद मिश्र पृष्ठ 180
4. गीत फरोश काव्य संग्रह भवानीप्रसाद मिश्र पृष्ठ 114
5. तूस की रात काव्यसंग्रह भवानी प्रसाद मिश्र पृष्ठ 70
6. आज के लोकप्रिय कवि डॉ. विद्यानिवास मिश्र पृष्ठ 106
7. त्रिकाल संध्या काव्यसंग्रह भवानी प्रसाद मिश्र पृष्ठ 11
8. आज के लोकप्रिय कवि डॉ. विद्यानिवास मिश्र पृष्ठ 106
9. गीत फरोश काव्य संग्रह भवानीप्रसाद मिश्र पृष्ठ 64
10. दूसरा तारसप्तक अज्ञेय भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन
11. दूसरा तारसप्तक अज्ञेय भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन
12. आज के लोकप्रिय कवि डॉ. विद्यानिवास मिश्र पृष्ठ 106
13. गीत फरोश काव्य संग्रह भवानीप्रसाद मिश्र पृष्ठ 114